nwda.gov.in

जोशीमठ में प्राकृतिक जलस्रोतों के प्रवाह में असामान्य बदलाव

सुमन सेमवाल • देहरादून

उत्तराखंड के जोशीमठ में भूधंसाव की घटना के साथ क्षेत्र में तमाम जलस्रोतों के प्रवाह में भी असामान्य बदलाव देखने को मिला है। इसका कारण केंद्रीय भूजल बोर्ड की जांच रिपोर्ट में स्पष्ट किया गया है। भूजल बोर्ड के विज्ञानियों के अनुसार, प्राकृतिक जलस्रोतों के आसपास भारी और बेतरतीब निर्माण से न सिर्फ इनके अस्तित्व पर खतरा बढ़ा है, बल्कि जमीन के भीतर इनके मार्ग बदलने से भूधंसाव में बढ़ोतरी से भी इन्कार नहीं किया जा सकता।

केंद्रीय भूजल बोर्ड के विज्ञानियों ने जोशीमठ क्षेत्र के आठ (छह में प्रवाह) जलस्रोतों समेत चार हैंडपंप का अध्ययन किया। इस दौरान इनके प्रवाह का दैनिक परीक्षण किया गया। विज्ञानियों के मुताबिक, सिंहधार क्षेत्र में भूजल स्तर में 20 से 60 सेंटीमीटर प्रतिदिन के हिसाब से कमी दर्ज की गई। इसके पीछे सीधे तौर पर भूधंसाव को कारण माना गया। यहां 11 जनवरी, 2023 को भूजल स्तर 47.03 मीटर बिलो ग्राउंड लेवल (जमीन स्तर के नीचे) था, जो कि 18 जनवरी, को 51.2 मीटर तक नीचे जा पहुंचा।

भूजल बोर्ड की रिपोर्ट में यह भी पाया गया कि जोशीमठ में विभिन्न जलस्रोतों के प्रवाह में असामान्य रूप से अंतर पाया गया है। यह अंतर एक लीटर प्रति मिनट से लेकर 650 लीटर प्रति मिनट के बीच का है। माना गया है कि जलस्रोतों के इर्द-गिर्द पक्के निर्माण के कारण इनका प्रवाह वर्षों पूर्व असामान्य स्थिति में आना शुरू हो गया। इस स्थिति को भी विज्ञानियों ने भूधंसाव से जोड़कर देखा है। साथ ही ऐतिहासिक भूकंपीय फाल्ट लाइन मेन सेंट्रल थ्रस्ट (एमसीटी) के क्षेत्र में आने के चलते भूकंपीय घटनाओं को भी एक वजह माना।

पानी की गुणवत्ता पर असर नहीं: केंद्रीय भूजल बोर्ड ने भूधंसाव की घटना के चलते इसके पानी की गुणवत्ता का भी परीक्षण किया।

विज्ञानियों की संस्तुति

- जल स्रोतों के इर्द-गिर्द किसी भी तरह के निर्माण की अनुमति न दी जाए।
- जल स्रोतों के इर्द-गिर्द जो भी पक्के निर्माण हैं, उन्हें हटा दिया जाए।
- विभिन्न स्थानों पर रिटेंशन दीवार के साथ खाई बनाई जाए, इससे भूजल पर दबाव को नियंत्रित किया जा सकेगा और सतह पर दरार उभरने की दर में भी कमी आएगी।